8. नागरिकशास्त्र एवं नीतिशास्त्र :—

ना०शा० व नीतिशास्त्र के सम्बन्ध के विषय में के० पुन्ताम्बेकर का कथन है, "यदि नीति-शास्त्र उत्तम जीवन दर्शन है तो ना०शा० उसका प्रयोग है।"

सही अर्थ में यदि देखा जाये तो दोनों ही विषय नैतिक आचरण की शिक्षा देते हैं व आदर्शों की बात करते हैं। विचारकों का मानना यह है कि बिना धर्म के नागरिक एक मृत्युपाश है। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है, "ना०शा० नैतिक सैद्धान्तिक व व्यवहारिक दोनों है।"

प्रसिद्ध शिक्षाविद् फ्रॉय ने ठीक ही कहा है, "यदि कोई चीज नैतिक दृष्टि से अनुचित है तो वह नागरिक दृष्टि से उचित हो ही नहीं सकती है।" इस सम्बन्ध में काण्ट का विचार यह है कि, "सच्चा नागरिकशास्त्र जब तक नैतिकता में श्रद्धा नहीं रखता है, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है।"

वास्तव में नागरिकशास्त्र अपनी विषय वस्तु आचारशास्त्र से ही ग्रहण करता है; चूँकि बिना आचरण के कोई भी नागरिक श्रेष्ठ नागरिक नहीं बन सकता। अतः दोनों ही शास्त्र परस्पर सम्बन्धित है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2 नागरिकशास्त्र एवं मनोविज्ञान :—

नागरिक शास्त्र समाज में विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं का हल करता है। इन समस्याओं का हल जब हम मनोवैज्ञानिक परि-प्रेक्ष्य में करते है तो हम नागरिकशास्त्र व मनोविज्ञान को जोड़ते है। इसके साथ ही मनोविज्ञान वंशानुक्रम, पर्यावरण, व्यक्तित्व तथा उसकी मानसिक क्षमताएं आदि का अध्ययन करता है और नागरिक के लिए आव-श्यक है कि वह मानसिक दृष्टि से परिपक्व हो जिससे वह परिस्थितियों के साथ अनुकूलन स्थापित कर सके इस प्रकार भी यह दोनों विषय एक-दूसरे से सम्बन्धित है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अभ्यास आधारित प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :—

1. आप विद्यालय - पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से नागरिक शास्त्र का किस प्रकार समन्वय स्थापित करेंगे ?

2. भारत में छात्रों के लिए नागरिकशास्त्र की आवश्यकता तथा महत्व को स्पष्ट कीजिए ?

3. नागरिकशास्त्र की प्रकृति की विवेचना कीजिए ?

4. नागरिकशास्त्र की परिभाषा दीजिए तथा इसके क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए ?

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

23.9.20